**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030**
**Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 645-648**

# शील कौशिक कृत 'एक सच यह भी' कहानी–संग्रह में नारी की यथार्थपरक स्थिति का विश्लेषण

**नीलम कुमारी**
शोधार्थी (हिन्दी–विभाग), एम.डी.यू., रोहतक, हरियाणा, भारत।

## प्रस्तावना

सृजन प्रकृति की अद्भुत घटना है। बीज अंकुरित होकर पौधा बनता है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। यही स्थिति मानवीय समाज की है। बच्चे बड़े होकर माता–पिता बनते हैं और उनके माता–पिता बुजुर्ग हैं। यह क्रम अनवरत चलता रहता है। बच्चों की सेवा जितनी आवश्यक है। उतनी ही बुजुर्ग माता–पिता की। भारत में बुजुर्गो की कुल संख्या 8.1 करोड़ है। पश्चिमी देशों की तुलना में हम अभी भी बुजुर्ग एवं नारी की सोसल सिक्योरिटी देने के मामले में अत्यन्त पिछड़े हैं। समाज में नारी की यथार्थ स्थिति से अवगत कराने वाली हरियाणा की महिला रचनाकारों में डा. शील कौशिक का नाम किसी औपचारिक परिचय का मोहताज नही है। वे कवयित्री है, कहानियां लिखती है और लघुकथा में भी उनकी सार्थक दखल है। वर्तमान समाज की विदुपताओं, विषमताओं, विसंगतियों और विडम्बनाओं का ममन्तिक उद्घाटान करती है। लेखिका की सूक्ष्म दृष्टि मानव मन की गहनतम पर्तो तक पहुंचती है, अन्तर्तम की कन्दराओं, गुहाओं में पैठ कर कटु यथार्थ का मर्म–स्पर्शी विवेचन करती है। इस सन्दर्भ में शील कौशिक जी की कहानियों से प्रभावित होकर डा. रमेश सिद्धार्थ उनके बारे में कह उठते हैं इनकी कहानियों में चरित्र–चित्रण परिवेश व मान्यताओं के साथ साथ अपने मंतव्य में भी लेखिका पूर्णतया स्पष्ट व आश्वस्त है।

## 'एक सच यह भी' कहानी–संग्रह में नारी की यथार्थपरक स्थिति

डा. शील कौशिक का हरियाणा कहानीकारों में श्रेष्ठ स्थान है। महिला कहानीकारों को एकजुट करने में उनका प्रयास सराहनीय है। नारी की यथार्थ स्थिति एवं मनोदश का सजीव चित्र अंकित करने में उनकी कहानियों का कोई सानी नही है। उनका दूसरा कहानी–संग्रह एक सच यह भी है। डा. शील कौशिक स्वंय को मुख्यतः कथाकार ही मानती है। इनकी कहानियां अपने समवेत पाठ में आदर्श की भित्ति पर केन्द्रित है और जीवन के उच्चाशयों को मानवी संवेदना को साथ रेखांकित करती है। यही ही नही मध्यवर्गीय नारी के अंतर्मन की पीड़ा, अंतद्वन्द्वों और पूर्वाग्रहों को निरूपित करती है।

## अ. नारी के अन्तर्मन की स्थिति

डा. शील कौशिक के कहानी–संग्रह 'एक सच यह भी' में नारी की अन्तर्मन पीड़ा, द्वन्द्वात्मक स्थिति, उदात मनोभाव, दयनीय, वृद्वों की अवस्था, यथार्थ एवं आदर्श, सौहार्द भाव, आत्म–सम्मान आदि भावों पर प्रकाश डाला है। इसका विस्तृत विवेचन आगे क्रमशः किया जा रहा है।

'उसने सीख लिया' नामक कहानी में एक छोटे बच्चे की हालत पर अन्तर्मन की पीड़ा को व्यक्त किया है। लेखिका कहानी महिला मात्र के माध्यम से निजी भाव को समायोजित किया है। एक जगह बालक के मुख से लेखिका ने कहलवाया तो है ही साथ में स्वंय की अन्तर्मन की पीड़ा को भी उजागर किया है। श्उस दिन मैं दरवाजे पर खड़ी थी कि वह बच्चा हाथ में कुछ लेकर आया, बीबी जी यह प्रसाद मेम साहब ने भिजवाया है। 'अच्छा लाओ' क्या नाम है तुम्हारा? मैने हाथ में लिफाफा पकड़ते हुए पूछा। सोनू उसकी जुबान से पिसला परन्तु अगले ही पल वह समझ गया और बोला, नही मेरा नाम छोटू है... छोटू यह कहकर वह भाग खड़ा हुआ। वह तो चला गया पर मेरे मन में अनेक प्रश्न छोड़ गया।"[1]

**'लौट आया बंसत'** शीर्षक कहानी में समकालीन परिस्थितियों से पूरी तरह अवगत लेखिका ने सास–बहू के मधुर सम्बन्धों में कड़वाहट आने की स्थिति पर भी प्रकाश डाला। उनकी यही मनोदशा 'लौट आया बंसत' के रूप में सामने आई। 'कनिका' नामक पात्र छोटू बहू थी। उसकी सास उसी के पास रहती थी। सास के पास उसके कीमती सुन्दर आकर्षक टॉप्स हैं जिस पर अन्य बहू–बेटियों की नजर भी है। लेखिका ने इस बात पर जोर डाला की स्वार्थ की नीति आपसी सम्बन्धों में भी बिखराव पैदा कर देती है। मां की बीमार होने पर सभी परिवार के सदस्य इकटठे होते हैं कि तभी मां के टॉप्स गायब हो जाते हैं। शक की सुईयों अपनों पे ही फिरने लगती है। अंत में सासू मां अपनी बहू पर ही शक करने लगती है। धीरे धीरे बहू से बोलना बंद कर देती है और अन्दर ही अन्दर अपनी पीड़ा में जल रही थी। इसी अन्तर्मन की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लौट आया बंसत में लिखा है श्मां जी ने सोचा कम्मो हमेशा ही कहा करती मां तुम्हारे ये टॉप्स मुझे बहुत पसंद है, मेरी शादी में कुछ देना या न देना पर ये टॉप्स जरूर देना। विवाह के पश्चात अभी पिछली बार मायके आई तब भी हंस कर कह रही थी। मां जब तुम मरने लगोगी तो ये टॉप्स मुझे ही देना। विचारों ने करवट बदली.....वह मुंह फट बड़बोली और चंचल जरूर है, पर भला उसके घर में किस चीज की कमी है जो मेरे टॉप्स पर लार टपकाए ये सब तो वह मजाक में कहती थी।"[2]

'आईना' शीर्षक कहानी में दर्शाया है किः– वर्तमान समाज में नारी ही नारी की दुश्मन बनी हुई है। आज कदम–कदम पर उसे अपनों से ही मार खानी पड़ रही है। प्राचीन समय से ही नारी का शोषण होता रहा है। वह अपने सपनों को चाहकर भी नही जी सकती। बचपन से ही पुरूष समाज के अधीन रहकर काम करना पड़ता हैं। स्वतन्त्रता के लिए प्रयासरत होने के बाद भी, स्वतन्त्रता से वंचित रह जाती है। लेखिका ने विविध कहानियों के माध्यम से वृद्ध अवस्था में नारी की स्थिति पर अवलोकन किया है। कैसे एक महिला अपनों से मिलने के लिए तड़पती रहती है। बचपन में भाई से अनुमति, कभी मम्मी–पापा से कभी पति से तो कभी अपने ही बच्चों से अनुमति लेनी पड़ती है। शील कौशिक की 'आईना' कहानी इसी स्वतन्त्र समस्या पर आधारित है। लेखिका कहानी के माध्यम

से बताना चाहती है कि घर की बहू भूल जाती है कि उसे भी कभी सास बनना है, उसे भी कभी बुढापा सहन करना है। इतिहास खुद को दोहराता है 'आईना' कहानी में एक जगह लिखा है– "आदतन वह उठ कर इस परेशानी के प्रभाव का जायजा लेने आईना के समक्ष पहुंची। उसके एक छाया प्रतिबिम्बत होते दिखाई पड़ी। वह और कोई नही उसकी सास की परिकल्पना उसके मानस पटल पर उतरकर आईनें में बिम्बित हो रही थी। अतीत की परतें एक एक करके उधड़ने लगी। बिल्कुल ऐसे ही मेरी सास मेरे आगे गिड़गिड़ाने रही थी। विद्या मैं तेरे आगे हाथ जोड़ती हूं। मुझे अपने भाई से मिलने के लिए जाना है। उसके लड़के की शादी है। भगवान तेरी काया में सुख देगा तुझे बहुत पुन्न मिलेगा, मुझे वहां जाने दो। परन्तु टस से मस न हुई थी और झिड़क कर कहा था, शर्म नही आती। इस बुढापे में घूमने फिरने की पड़ी है। हमसे आपकी रिश्तेदारियां नही निभाई जाती। अब उन्हे जरूरत होगी तो आकर ले जाऐगें।"[3]

## प्रश्नों की नागफनी

शीर्षक कहानी में स्माज में नारी के अधिकारों से सम्बन्धित समस्या को भी उठाया गया है। कहानियों में इस बात पर जोर दिया गया है कि लड़कियां पुरूष समाज के हाथों कठपुतली बनकर रह जाती है। वह अपने मां–बाप से मिलने के सुख से वंचित रह जाती है। भाई अपनी बहन को स्वार्थ की नजर से देखते हैं तो बहन को भी लगने लगता है कि वह उनके पास जाएगी तो उसे स्वार्थी न कहा जाए। आजकल होता भी यही है। कौशिक जी ने अपनी कहानी 'प्रश्नों की नागफनी' में एक बहन की मनोदशा का पीड़ा को व्यक्त किया गया है। लेखिका ने लिखा है "कोई कहता–बेटों से बहुत प्यार था तभी उसे मिलने के लिए बुला दिया। बेटी पर भरोसा किया, उसी से तन–मन की बतलाकर गए हैं–क्या पता किसी के मन में क्या छिपा है? दिशा यह सब सुनते–सुनते खीज उठी। उसे ही कयूं कटघरे में खड़ा किया जा रहा है। वह तो पूरे छह महीने बाद बाबू जी से मिलने आई है, जमीन जायदाद बाकी तो सब भाईयों में बांट चुके हैं, भला उसका क्या स्वार्थ रहता?"[4]

## चक्रव्यूह

मातृत्म प्रेम एक ऐसा प्रेम है जिसके आगे सभी प्राणियों को झुकना पड़ता है। बच्चों के नाम पर प्रत्येक दम्पति कष्टों को सहन करने के लिए तैयार हो जाती हो। वह बच्चों की खुशी के लिए बड़े–बड़े त्याग कर देती है। लेखिका ने अपनी कहानी 'चक्रव्यूह' में इसी औलाद के दुःख में विज्ञान को त्यागकर जादू–टोन, टोटके में विश्वास करने लग जाती है। इस कहानी में भी एक मां अपने बच्चों का चश्मा उतरवाने के लिए अंधविश्वास में फंस जाती है। लेखिका ने इस बात का सजीव चित्रण किया है कि जैसे कुछ लोग बच्चों की खुशी के नाम शोषण करते हैं। लेखिका ने लिखा है "मानव मन कमजोरियों का पुतला माना है। एक मां के लिए उसकी औलाद का दीन–हीन होना सबसे कमजोरी होती है। मीना की सोई हुई ममता जागृत हो उठी...हाय! मेरा नन्हा सा बच्चा.....इससे अच्छा भला और क्या हो सकता है कि इसका चश्मा उतर जाए? चार वर्ष की उम्र....नन्ही सी जान और उस पर चश्में का बोझ.... मैने इसका चश्मा उतरवाने के लिए क्या क्या उपाय नही किए।"[5]

वस्तुतः भारतीय नारी की अन्तर्मन की पीड़ा का स्वाभाविक चिड़ान करने में शील कौशिक जी का कोई सानी नही है। विविध समस्याओं से जूझते हुए नारी की अन्तर्मन पीड़ा का यथार्थ चित्रण कहानियों में किया गया है।

## आ. नारी की द्वन्द्वात्मक स्थितिः– वह प्रकाश रेखा

स्वतन्त्रता से पूर्व भारत में नारी की दशा अत्यन्त दयनीय थी, तो वहीं आजादी के बाद भी कोई खास बदलाव भी नही हुआ प्राचीन समय से ही उसे कोई सुरक्षित स्थान नही मिला। वह आज भी वासना की ही बिन्दू मानी जाती है वह सदा से अन्य पर आश्रित रही है। नारी को समाज का भय दिखाकर, बार बार दबाने की कौशिश की जाती है। वह समाज में अनेक विंसगतियों से जूझती महिला मानसिक रूप से परेशान रहती है। वह अन्तर्द्वन्द्व के जाल में ही उलझी रहती है। कभी समाज के बन्धनों से मुक्त होना चाहती है तो कभी समाज की परम्परा से भयभीत होकर खुद को उसी में कैद रखती है। शील जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से इस बात पर जोर डाला है कि नारी सामाजिक परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों से दूर नही हो सकती। उन्होने अपनी कहानी 'वह प्रकाश रेखा' में 'सतवंती' नामक महिला पात्र अपने बच्चें से परेशान है। बच्चे उसे एक नौकरानी की तरह रखते हैं व स्वतन्त्र जिन्दगी जीने की बजाय एक कैदी सी स्वंय को महसूस करती है। लेखिका ने इस कहानी में उनके मन में चल रहे अन्तर्द्वन्द्व का सजीव चित्रण किया है।

"सतवंती की यह सुबह बाकी दिनों में एकदम अलग थी। उसमें नई ऊर्जा स्फूर्त हो रही थी। एक बार फिर मोह–ममता उस पर हावी हुई–हाय लोग क्या कहेगें? मेरे बेटों की बेइज्जती न होगी। लोकलाज भी तो कोई चीज है, ना–बाबा ना मैं ऐसा न कर सकूंगी। दूसरी ही पल उसे लगा मास्टर जी उसे फिर कुछ कहने का प्रयत्न कर रहे हैं। एक विश्वास की लहर उसके तन–मन को रोमांचित कर गई। वह विचारों को झटक कर उठ खड़ी जब बेटों को उससे कुछ लेना–देना ही नही तो वह क्यों उनके बारे में सोचें? द्वन्द्व से बाहर निकल कर सतवंती ने अपना सामान बांधा और बेटे को अपना फैसला सुना दिया।"[6]

## उसने जीना सीख लिया

नारी की स्थिति हमेशा संवेदनशील रहती है। संसार के किसी भी प्राणी को देखकर भावुक हो जाना, उनका स्वाभाविक गुण है। चाहे कोई पशु हो, पक्षी हो या कोई बच्चा। शील कौशिक जी की कहानियां भी इनसे अछूती नही है। किसी के भी कष्ट से प्रेरित होकर दुःखी हो जाती है। इन सब से प्रेरित होकर ही लेखिका ने 'उसने जीना सीखा लिया' नामक कहानी लिखी। मानव मन द्वन्द्वग्रस्त प्राचीनकाल से ही रहा है। साधारणतः ऐसे में धर्म सकंट का नाम भी लिया जाता है। कहानी में 'छोटू' नामक नौकर को देख नायिका अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त हो जाती है। उसके भूत, वर्तमान एवं भविष्य को लेकर उलझन में रहती है। लेखिका ने लिखाः–"मैं सोचने लगी कि छोटू कैसे उनकी गरिमा का साधन बन गया। मानसी ने छोटू को भेजकर, प्यार और त्याग दिखाकर वाह–वाही लूट ली है। मुझे छोटू पर गुस्सा आने लगा। वह क्यूं गया? न जाने किस मिटटी का बना है अपने को हर माहौल में अभ्यस्त कर लेता है और खुश रहता है।"[7]

## एक सत्य यह भी है

मनुष्य धार्मिक भय से भयभीत रहता है। वह इस जन्म में ही नही बल्कि अगले सातों जन्मों तक के बारे में विचार कर लेता है। वह चाहता है कि इस जन्म में ही नही बल्कि अगले जन्म में भी उसे पुण्य मिले। अंधविश्वासों के हाथ कठपुतली बनकर नाचता रहता है। कभी उसे धर्म का भय, कभी जाति का, कभी समाज का तो कभी परिवार का। वह स्वतन्त्र जिन्दगी चाहकर भी नही जी पाता। द्वन्द्वात्मक स्थिति किसी के लिए खतरनाक हो सकती है।

हट्टे–कट्टे आदमी को भी दीमक की तरह खा जाती है। लेखिका ने अपनी प्रसिद्ध कहानी 'एक सच यह भी' में दर्शाया है कि कैसे एक व्यक्ति सब का विश्वास जीतकर, अपनी मन–मानी करता है। कहानी के माध्यम से बताने की कोशिश की है कि बच्चे अपने स्वार्थ के लिए मां बाप को आधार बनाते हैं। 'अतुल' नामक पात्र के माध्यम से लेखिका ने अर्न्तद्वन्द्व की स्थिति के सन्दर्भ में लिखा हैः–"वह मन ही मन संकुचा भी रहा था कि वह बिना सूचना के अचानक जाएगा और कहीं हरिकिशन घर पर ना मिला और उसकी मां ने उसे पहचानने से इन्कार कर दिया तो वह अपना–सा मुंह लेकर रह जाएगा।"[8]

**बिखरपन्ने**

लेखिका ने धर्म से तथा अंधविश्वास से भयभीत नारी की अन्तश्चेतना में चल रहें अन्तर्द्वन्द्व का व्याख्यान किया है। किसी ज्योतिषी के कथन से कि उसकी मृत्यु छह महीने में होनी है। ऐसे कथन से नारी पात्र अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त हो जाती है। वह अपने पति और बच्चे के बारे में सोचने लगती है। कैसे उनका गुजारा होगा? कौन उन्हे प्यार करेगा? इस प्रकार का अन्तर्द्वन्द्व बार बार तड़फाता है। 'बिखरे पन्ने नामक कहानी में उदाहरण प्रस्तुत है।

''पल–पल जीवन जीने वाली मां एकदम चुप कैसे हो गई। कहीं कोई गड़बड़ अवश्य हैं उसका मन आंशकाओं से घिर गया 'क्या मां की तबीयत ठीक नही है? कहीं कुछ अनिष्ट तो नही हो गया, कहीं पापा से झगड़ा तो नही हो गया।"[9]

**लौटा आया बंसत**

चोरी के सन्देह में मानव की सोच कहां तक पहुंच जाती है 'लौट आया बंसत' कहानी में रिश्तों की दरार के अन्तर्द्वन्द्व को बखूबी चित्रित किया गया है। शंका रिश्तों को हिलाकर रख देती है। घनिष्ठ रिश्तों को कमजोर कर देती है। प्रेम के अटूट–बन्धन को तोड़ देती है। ऐसी ही विचारधारा से प्रेरित कहानी में कनिका और उसकी सास जूझ रही है। कहानी में सासु मां अपनी बहूं से बहुत ही प्रेम करती है, लेकिन परिस्थितियां उन्हे शक के दायरे में लाकर खड़ा कर देती है। लौट आया बंसत में सासू मां के मन में चल रहे अर्न्तद्वन्द्व का चित्रण इस प्रकार है–

''मां सोचने लगी–बड़ी बेटी निम्मों ने तो कभी कुछ कहा ही नही..... ...वह तो बचपन से ही सीधी व सन्तोषी स्वभाव की है, कभी बढ़ चढ़ कर लालसा नही दिखाई, जो मिल गया, सो ठीक.....उसके बारे में ऐसा वो सोच भी कैसी सकती है? हां बड़े बेटे की बहू शिल्पा खूसट जरूर है, गाहे–बगाहे व ताने देती ही रहती है। इस उम्र में भी बड़े बड़े टाप्स लटकाए रहती हो। इधर बहू के पास तो कान में हवा भर कर बालियां डाल दीं। एक बार अपने भाई की शादी में मेरे टाप्स पहन कर गई थी, तब से इन टॉप्स के प्रति उसकी उत्कंठाओं का ज्वार बढने लगा था। उसका मोह जाग गया था और वह बार बार इन्हे पहनने की लालसा करने लगी थी। हो सकता टाप्स उसी ने पार कर दिए हों। अब मुझे तो बीमारी में कुछ भी होश न था कुछ देर मौन रह और सोच कर वह कहने लगी–जुबान से चाहे वह बक बक, झक–झक कर ले पर ऐसी हरकत कदापि न करेगी।"[10]

**इ.नारी में आत्म–सम्मान की स्थिति**

**वृद्धाश्रमः–** हरियाणा की प्रसिद्ध कहानीकार ने अपनी समकालीन जीवन से सम्बन्धित कहानियों में नारी में आत्म सम्मान की स्थिति पर प्रकाश डाला हे। इनकी कहानियों के बारे में सुविख्यात कहानीकार डा. सुभाष रस्तोगी ने लिखा भी हैः– इनकी कहानियों में गजब की पठनीयता है। कमोबेश सभी कहानियां आदर्श की भिति पर केन्द्रित है और जीवन के उच्चाशयों को मानवीय संवेदना के साथ उभरती है..... तेरे पास हुनर है, आचार, पापड़, बड़िया, सेवइयां बनाना जानती है, सभी औरतें मिल–जुलकर सहकारी समिति बनाकर हाथ का बना माल बेचकर अच्छा पैसा कमाने के साथ साथ माज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है।"[11]

लेखिका ने नारी के बारे में बताया है, जब तक वह अपने उपर होते हुए जुर्म पर आवाज नही उठाएगी, उसकी आत्मा उसे दिक्कारती रहेगी, अगर उसमें कोई हुनर है तो वह उसके सहारे अपना कुछ न कुछ काम कर जीवन यापन कर सकती है, हमारे समाज में अधिकतर यह देखने को मिलता है, जो व्यक्ति काम नही करता, उसे घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। चाहे वह कोई बुजुर्ग औरत ही क्यों न हो, लेखिका ने बुजुर्ग औरतों के बारे में बताया भी है। आधुनिक समाज में औरतें अपने आत्म सम्मान के लिए झूझती रहती हैं। बहू–बेटे अपनी बुजुर्ग मां को सिर्फ एक बोझ की तरह रखते हैं न तो उन्हे अपनी पसंद का खाना मिलता है न ही पहनने के लिए वस्त्र लेखिका ने अपनी कहानी के माध्यम से यह दर्शाया भी है। किस प्रकार उम्मीद का हाथ थामें मां अपने बेटे के घर आती है। पर सभी उससे ऐसे कतराते हैं जैसे वह कोई जीती जागती प्रेतनी हो, जब उसे उस व्यवहार से ग्लानि महसूस होती है तो उसे उम्मीद की एक किरण दिखाई देती है। उसे उस घर से वृद्ध आश्रम में जाना ज्यादा बेहतर लगता है, जहां जाकर वह अपने हुनर से अपने लिए और औरों के लिए कुछ कर सकती है। वहां कम से कम उसे बेकार तो नही समझा जाएगा। वृद्धाश्रम में सभी औरतें मिल जुल कर सहकारी समिति बनाकर हाथ का बना माल बेचकर अच्छा पैसा कमाने के साथ साथ समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होती है तथा औरों में भी आत्म विश्वास जगाकर औरतों को अपने पैरों पर खड़ी होने के लिए जागरूक कर समाज में अपनी सक विशेष पहचान बनाती है। दूसरी और लेखिका ने ऐसी औरत के बारे में बताया गया है। जो समाज में अपनी झूठी प्रतिष्ठा तथा सम्मान के लिए अपनी सास को भूखा–प्यासा सिर्फ शोपिस की तरह लोगों के सामने रखती है।

"बुढ़िया! चुपचाप लेटा भी नही जाता इतना काम है, अकेली जान मैं क्या क्यां करूं? बताए देती हूं, अबकी बार मुझे आवाज मत लगाना।"[12]

इस प्रकार लेखिका ने बताया किस प्रकार एक मजबूर बुजुर्ग से उसकी बहू बदतमीजी से उसे जवाब देती है, लोगों के सामने व अच्छाई का मुखौटा पहन कर तारीफ बटोरती है। दूसरी तरफ उसे चाय पीने के नाम पर लैक्चर दे कर अपनी जिम्मेदारी से पीछा छुड़वाती है। बहु को सिर्फ इस बात की चिन्ता थी, कहीं घर की सजावट में कहीं कोई कमी न रह जाए। घर की हालत के साथ साथ उसने मां की हालत भी सुधारी ताकि लोगों ये भ्रम रहे कि एक बहू अपनी सास का कितना ख्याल रखती है।

"मां जी के दुर्बल शरीर पर साड़ी लपेट दी। उसके इंदिरा गांधी कट दूधिया बालों की साड़ी के पल्लू से ढांप दिया, धुंधलाती, पनीली आंखों पर चश्मा सजा दिया।"[13]

किस प्रकार लोगों की आंखों में अपनी छवि बरकरार रखने के लिए झूठ का मुखौटा पहनेने से भी नही चूकती। ताकि लोग उसके घर के साथ साथ बुजुर्ग सास को देखे और सोचे बहू अपनी सास का कितना ख्याल रखती है और ख्याल तो बस दिखाने जैसा था। सास बार बार एक ही बात कह रही थी, मेरी कीर्तन में बैठने की हिम्मत नही है। मैं थोड़ी देर लेटना चाहती हूं। वह उसकी गुहार पर ध्यान दिए बिना उनका पल्लू ठीक करके कीर्तन में बैठा जाती है,वो बेचारी भूखी–प्यासी कीर्तन का समाप्ति होने का इंतजार

करती–करती बेहोश हो जाती है। इस प्रकार किस तरह बुढापे में तकलीफ और भूख के मारे उसकी आत्मा और शरीर का अंग प्रत्यंग कीर्तन कर रहा था। इसी प्रकार लेखिका ने अरमानों के पंख लगाए एक औरत का वर्णन किया है। जो हमेशा से उत्कृष्ट एथलीट बनना चाहती थी। पर उसे अपने इस सपने से समझौता करना पड़ा। शादी के बंधन में बंद कर घर की जिम्मेवारी में खुद को इस प्रकार व्यस्त कर लिया, जब अपने सपने को पूरा करने चली, तब पता चला वह उम्र के उस दहलीज पर पहुंच गई, जहां हाथ–पैर ही जवाब दे देते हैं। वह स्टेडियम को देख यादों में खो जाती है जब कॉलेज में टूर्नामैंट गेम्ज चल रहे थे। यह देख अनुपमा का मन और पैरा दोनों स्पर्धा में भाग लेने हेतु मचल रहे थे। जब उसने कोच से दौड़ में हिस्सा लेने को कहा तो काहेंगेः– ''व्यंग्यपूर्ण हंसते हुए उसके कपड़ों और सैंडिल पर दृष्टि डाली और कहा, ये सब पहन कर दौड़ लगाओगी? तीव्र संधाना आसाजाः अर्थात यदि इच्छा प्रबल हो तो वह जरूरत पूर्ण होती है।''[14]

उसने फलेयर से रस्सी बांधी, सैंडिल उतार कर एक तरफ फैंका और नंगे पैर ट्रेक पर जा खड़ी हुई। उसने एक के बाद एक वह पचास मीटर, सौ मीटर, दो सौ मीटर, लांग जंप लगभग। सभी स्पर्धाओं में भाग लेती रही और पोजीशन पाती रही। कोच को भी लगा अगर ये बिना अभ्यास के इतना अच्छा खेलती है तो अभ्यास कर हमें अनेक पदक दिला सकती है। उसे उस जीत की इतनी खुशी हुई, क्योंकि जो इज्जत उसे आज तक नही मिली थी। वो उसे आज मिल रही थी। हर कोई अनुपमा को जानने लगा था। होस्टल में भी खेलने के लिए हिदायत दी गई। अनुपमा को लग रहा था। हाथ से अवसर छूटा जा रहा था। उसके अरमान धूमि हो रहे थे ओर वह मजबूरी की डोर में बंधी थी। जीवन में फिर अभी ऐसा मौका हाथ ना आया। पढ़ाई खत्म होते ही अनुपमा को शादी के बंधन में बांध दिया गया फिर गृहस्थ जीवन लांघते हुए और एक अलग तरह की दिनचर्या निभाते उम्र के इस दाहते पर पहुंच गई। अब उसके पास स्टेडियम की यादें ही रह गई। पर वह इन यादों के भरोसे नही बैठती वह अपनी पोती के लिए सपने संजोती है तो अपने सपने को पूरा नही कर सकी तो क्या वह अपनी पोती को उत्कृष्ट एथलीट बनाएगी, अपनी पोती की उंगली थापे अरमानों को पंख देने के लिए चल पड़ी।

## ई. नारी की वृद्धात्मक स्थिति

**आईनाः–** डा. शील कौशिक ने नारी की वृद्धात्मक स्थिति का वर्णन किया है। किस प्रकार बुढापे में नारी का जीवन श्राप की तरह हो जाता है। वह बुढापे में अपने आप को बेबस महसूस करती है कि अब तो बस जिन्दगी के चंद दिन नही ही बचे हैं। किसी तरह कट जाए। वह हर पल हर क्षण उसकी जिन्दगी एक बोझ हो जाती है। लेखिका ने कहानी के माध्यम से नारी की वृद्धात्मक स्थिति के बारे में कहा है।

''बहू–बेटे अपने में मस्त रहते। पोते–पोती परदेश में पढने गए हुए थे। आस–पड़ोस, मोहल्ले में आने जाने की मनाही थी, इस डर से कि कहीं उसकी वजह से नाक नीची न हो जाए। सारा दिन चहकने वाली सतवन्ती एकाकी हो हर कुंद हो गई। घर के किसी पालतु जानवरों की तरह उसे समय पर खाना मिल जाया करता उसे इससे ज्यादा कोई सरोकार न रखता। मौसम में हल्की ठंड शुरू हो गई थी। दीवाली आने वाली थी पर उसके लिए हर त्यौहार भी अकेलेपन का पैगाम लाता। ऐसे में मास्टर जी सात दिन पहले से अपनी फरमाइशें शुरू कर देते थे। मेवे डालकर खीर बना भई साल भर का त्यौहार है, कभी हलवा बनवाते कभी भानु राम की कचौड़ी।''[15]

लेखिका ने सतवंती नाम की औरत के बारे में बताया है। किस प्रकार उम्मीद का हाथ थामें वह अपने बेटे के घर आती है। दोनों बेटों ने मां को छः महीने रखने का फैसला किया। वह नए माहौल में अपने आपको ढालने की कोशिश कर रही थी। फिर भी बात बात पर बहू–बेटे ताने देने से नही चूकते। छोटी सी गलती होने से इस तरह डांटा जाता जैसे उसने कोई गुनाह कर दिया। वह सारा दिन घर में किसी पालतु जानवरों की तरह पड़ी रहती, जिसे सिर्फ सुबह शाम जिन्दगी काटनी है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि डा. शील कौशिक ने समकालीन परिस्थितियों से जूझते हुए नारी की स्थितियों एवं मनोदशा का चित्रण किया है। इसमें नारी की अतर्मन की स्थिति का चित्रण करते हुए उसकी पीड़ा को समझा है। समाज में बच्चों द्वारा दुत्कारने की पीड़ा को व्यक्त किया गया है। वर्तमान समाज की विदुपताओं, विषमताओं, विसंगतियों और विडम्बनाओं का का ममन्तिक उद्घाटन करती है। लेखिका की सूक्ष्म दृष्टि मानव मन की गहनतम परतों तक पहुंचती है, अन्तर्मन की कन्दराओं, गुहाओं में पैठ कर कटु यथार्थ का मर्म–स्पर्शी विवेचन करती है। प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिम पर्यावरण की समस्या हो या प्रकृति से अंधाधुंध छेड़छाड़ प्राकृतिक संसाधनों का निर्मम दोहन हो या पानी की समस्या, सुविधा शुंल्क कमीशन दिखाया, सभी को बेबाकी से निरूपित करने में लेखिका की सक्षमल`खनी को महारत हासिल है। हम कह सकते हैं कि नारी मार्मिक उदात यथार्थ आदर्श द्वन्द्वात्मक वृद्वात्मक, धार्मिक, सामाजिक, पारिवारित आत्म सम्मान आदि विविध स्थितियां एवं मनोदशा का यथार्थ चित्रण हुआ है।

## सन्दर्भ


1. डा. शील कौशिक 'एक सच यह भी' पृष्ठ संख्या 08
2. वही पृष्ठ संख्या–07
3. वही पृष्ठ संख्या–07
4. वही पृष्ठ संख्या–07
5. वही पृष्ठ संख्या–24
6. वही पृष्ठ संख्या–32
7. वही पृष्ठ संख्या–38
8. वही पृष्ठ संख्या–39
9. वही पृष्ठ संख्या–56
10. वही पृष्ठ संख्या–78
11. वही पृष्ठ संख्या–108
12. वही पृष्ठ संख्या–23
13. वही पृष्ठ संख्या–27
14. वही पृष्ठ संख्या–66
15. वही पृष्ठ संख्या–108